Impact Factor-8.575 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January-2023

(CCCLXXXIII) 383-A

स्वाधीनता आंदोलन में
हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म और पत्रकारिता का योगदान

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. M.N. Kolpuke
Principal
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

Editor
Dr. Govind G. Shivshette
Department of Hindi,
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

This Journal is indexed in :
- **Scientific Journal Impact Factor (SJIF)**
- **Cosmos Impact Factor (CIF)**
- **International Impact Factor Services (IIFS)**

For Details Visit To : ***www.aadharsocial.com***

Aadhar PUBLICATIONS

INDEX-A

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी साहित्य	डॉ आरती बंसल	1
2	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता	डॉ. अनिला मिश्रा	4
3	स्वतंत्रता आन्दोलन : नवजागरण में हिंदी साहित्य का प्रखर राष्ट्रवाद	डॉ. बोबडे जयंत ज्ञानोबा	8
4	स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी फिल्म	प्रा.डॉ. पल्लवी भूदेव पाटील	14
5	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी नाटक	डॉ. बन्सीलाल हेमलाल गाडीलोहार	16
6	स्वाधीनता आंदोलन मे हिंदी कवियों की भूमिका	प्रा.डॉ. अमोल रमेश इंगले	21
7	भारतीय हिंदी फिल्मी गीतों में व्यक्त राष्ट्रीय भावना	डॉ.शिवसर्जन होनाजी टाले	24
8	स्वतंत्रता संग्राम में सुभद्रा कुमारी चौहान का योगदान	प्रा. डॉ. मुल्ला मुस्तफा लायक	27
9	रेणु और मैला आँचल : स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में	डॉ. सिन्धु सुमन	31
10	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी फिल्म	डॉ.रेशमा गणेश लोंढे	35
11	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य	डॉ. अभिमन्यु नरसिंगराव पाटील	39
12	आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय चेतना	डॉ.कल्याण शिवाजीराव पाटील	43
13	रामधारी सिंह दिनकर के साहित्य मे राष्ट्रीय चेतना	प्रा. डॉ. दत्तात्रय लक्ष्मण येडले	47
14	स्वाधीनता आंदोलन और नवजागरण काल	डॉ. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे	51
15	राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत स्वाधीनता कालीन हिंदी काव्य	डॉ.विजय कुमार कुलकर्णी	54
16	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी फिल्मों का योगदान	प्रा.डॉ.मधुकर राऊत	57
17	आजादी के आंदोलन में : पत्रिकओंका योगदान	डॉ.जे.ए.चौधरी	60
18	हिंदी उपन्यासों में राष्ट्रवाद	प्रा.संतोष शिवराज पवार	63
19	स्वाधीनता संग्राम और हिंदी पत्रकारिता	डॉ.बबन रंभाजीराव बोडके	66
20	स्वाधीनता आंदोलन और दलित नवजागरण	डॉ. रामेश्वर वरशिळ	69

B.Aadhar Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal

Impact Factor -(SJIF) –8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- A

ISSN : 2278-9308

January, 2023

स्वाधीनता आंदोलन मे हिंदी कवियों की भूमिका

प्रा.डॉ. अमोल रमेश इंगले

हिंदी विभागाध्यक्ष शिवनेरी महाविद्यालय शिरूर अनंतपाल, जिला. लातूर- महाराष्ट्र-413544

दूरभाष क्रमांक-9423737256 ई-मेल-amoli6080@gmail.com

'15 अगस्त' 2022 को संपूर्ण भारत देश में "आजादी का अमृत महोत्सव" बड़े ही हर्ष, उल्लास और धूमधाम से मनाया गया। आजादी के 75 साल में हमने अपनी कार्य कुशलता से जो देश की ताकत बढ़ाई है उसे जनता तथा विश्व के सामने रखने के लिए कई सारे कार्यक्रमों केआयोजन किए गए थे। लेकिन इस आजादी आंदोलन के महायज्ञ में समाज के प्रत्येक वर्ग बच्चे ,जवान, बूढ़े, महिलाओं ने बढ़ चढ़कर कई सारे अन्याय को सहते हुए अपनी जान की बाजी लगाकर यह आजादी हासिल की है। अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति पाने के लिए सन 1857 से लेकर सन 1947 तक क्रांतिकारियों तथा आंदोलनकारियों के साथ लेखकों, कवियों, पत्रकारों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 19वीं 20वीं शताब्दी में ईस्ट इंडिया कंपनी अर्थात अंग्रेजो के खिलाफ भारतीय जनता द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन के संघर्ष की गाथा है।

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में कई सारे वीर योद्धा, सुधारक, लेखकों ने बहादुरी, विचार और प्रतिभा से आम आदमी को जगाने का ,उनमें जोश भरने का काम किया है। कवि साहित्यकार अपने युगीन समस्याओं के प्रति सावधान एवं संवेदनशील रहता है। इन कवियों ने विभिन्न चरणों में प्रसंग अनुसार कलम को ही शमशेर बनाकर राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत साहित्य लिखकर लोगों को इस आजादी आंदोलन के साथ जोड़ने का काम किया है। इस आजादी आंदोलन के लिए अन्य देशों के स्वातंत्र युद्धों और उनके गीतों के स्वर को हिंदी साहित्य में लिया गया था। फ्रांसीसी देश के राष्ट्रगीत का श्री बदरीनाथ भट्ट ने निम्नानुसार भावानुवाद किया था --

"उठो वीर गण उठो शस्त्र लो
ले लो खड्ग पटक दो म्यान।।"

लेकिन इस आजादी आंदोलन को अहिंसक बताने के लिए भी अधिकतर लड़ाई कलम से लड़ी गई है। साहित्यकारों ने स्वदेश, स्वधर्म, राष्ट्रीय भावना को अपने साहित्य के द्वारा हवा दे रहे थे जिसकी शुरुआत भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी प्रसिद्ध कविता 'नए जमाने की मुकरी' के माध्यम से की है--

" भीतर भीतर सब रस चूसे स।
बाहर से तन मन धन मूसे।
जाहिर बातन में अति तेज।
क्यों सखि ! साजन नहीं अंग्रेज।"1

भारतीय जनता पर अंग्रेजों के बढ़ते जुल्म, संपत्ति की लूटपाट जिससे देश की हो रही बदहाली को देखकर भारतेंदु जी ने अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों का खुलकर विरोध करते हुए तत्कालीन युवा पीढ़ी के भीतर अंग्रेज सरकार के जुल्म और संपत्ति लूटने के खिलाफ अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं ।अंग्रेज भारतीयों का शोषण लड़ाई-झगड़े से कम और हँस -हँस कर और मीठे बोल बोल कर ही हमें लूट रहे हैं के असलियत का बयान किया हैं।

जयशंकर प्रसाद की 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से' देश प्रेम की कविता है--

" असंख्य कीर्ति -रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह सी

सपूत मातृभूमि के रुको न शूर साहसी
अराती सैन्य सिंधु मे सुवाड़वाग्नि से जलो
प्रवीर हो जयी बनो -बढ़े चलो, बढ़े चलो।"2

वीर रस से परिपूर्ण यह कविता अपने अतीत के शूरवीरों के शौर्य का गुणगान करते हुए भारत के साहसी युवाओं को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित करती है। इतना ही नहीं यह कविता युद्ध भूमि की ओर बढ़ने के लिए योद्धाओं में विरोत्साह बढ़ाती है। हे देश के अमर्त्य वीर पुत्रों तुम देश के सच्चे सपूत हो, तुममे साहस, पराक्रम और शौर्य है। तुम सच्चे योद्धा हो तुम्हें रुकना नहीं है। तुम्हारे इस रुद्रावतार में ही शत्रु की हार दिखाई देती है। तुम्हारे वीर पुरखोंने अपने युद्ध कौशल से, बहादुरी से, यश से भारत भूमि का आंगन जगमगाया था। ऐसे ही तुम फिर से उनके दिव्य मार्ग पर चलकर विजयश्री लिख दो। यह कविता युवकों को विजयपथ की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करती है।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जी ने भारत के हर व्यक्ति के मन में आजादी की भावना प्रबल होने की उपलक्ष्य में 'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ' कविता लिखी है---

" माता की छाती का अमृत -मय पय कालकूट हो जाए,
आंँखों का पानी सूखे, हांँ, वह खून की घूंँट हो जाए,
एक ओर कायरता काँपे, गतानुगति विगलित हो जाए,
अंधे मूढ विचारों की वह अचल शीला विचलित हो जाए,
और दूसरी ओर कँपा देनेवाला गर्जन उठ धाए,
अंतरिक्ष में एक उसी नाशक तर्जन की ध्वनि मंँडराए,
कवि ,कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए।"3

कवि क्रांति का ऐलान करते हुए पराधीन भारतवासियों को आजादी के लिए अंग्रेजो के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। वे अन्य कवियों को भी क्रांति की प्रेरणा मिले ऐसी गीतों का निर्माण करने का आवाहन करते हैं। जिससे लोगों में गुलामी के खिलाफ लड़ने की तैयारी हो।उनका कहना है कि मां की छाती का पिया हुआ अमृत मय दूध शत्रुओं के लिए जहर बन जाए। हमारे आंँखों का पानी सूखकर आंँखों में खून उतर आए जिससे कायर अंग्रेज काँप उठे, हार कर भाग जाए। इस कविता में कवि गलत रूढी परंपरा का भी विरोध करते हैं। विवेकशून्य झूठी मान्यताओं की चट्टाने भी हिल उठे। क्रांति की गर्जना से आसमान गूंज उठे, शत्रु कांँप उठे, डरकर भाग जाए ऐसी तान सुनाने को कवि कहते हैं।

क्रांतिकारी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी भारत के अतीत का गौरव करते हुए भारत वासियों को जगाने के लिए 'जागो फिर एक बार' कविता लिखते हैं-

" पशु नहीं वीर तुम,
समर-शूर क्रूर नहीं,
कालचक्र में हो दबे,
आज तुम राजकुँवर,
समर सरताज।"4

कवि निराला जी इस उद्बोधन गीत द्वारा अतित का गौरव गान करते हुए नवयुवकों को स्वाधीनता आंदोलन में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करते हैं। 1919 के रोलेट एक्ट के विरोध में हुए जालियनवाला बाग हत्याकांड को लेकर लिखी गई यह कविता है। कवि नवयुवकों को संबोधित करते हुए लिखते हैं कि, तुम पशु नहीं शेरों की संतान हो, वीरों

की संतान हो जिन्होंने युद्ध में अलौकिक शक्ति का प्रदर्शन दिखाकर अपने प्राणों की बाजी लगाकर विजय प्राप्त कर लिया था। तुम उन्हीं वीरों की संतान हो। तुम युद्ध में पराक्रम दिखाने वाले हो। तुम्हें डरने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन तुम अपना गौरव भूल गए हो। तुम अंग्रेजों की नीति के कालचक्र में फंसे हुए हो ।हे राजकुमारों जाग जाओ तुम्हारे पास शक्ति है, योग्यता है। अगर तुम जाग जाते हो तो इतिहास गवाह है कि जीत का सरताज तुम्हारे ही सर पर होगा। इस प्रकार भारतीय युवाओं के मन में स्फूर्ती और चेतना भरने का काम प्रस्तुत कविता द्वारा किया गया है।

राष्ट्रीय चेतना की सजग कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने देश की आजादी के लिए लड़ रहे वीरों के सम्मान में लिखी कविता 'वीरों का कैसा हो वसंत'---

" भर रही कोकिला इधर तान
मारु बाजे पर उधर गान
है रंग और रण का विधान
मिलने को आए हैं आदि अन्त
वीरों का कैसा हो वसंत "5

कवयित्री के मन में देश की आजादी के लिए गहरी तड़प दिखाई देती है। इसीलिए वह पराधीन भारत को मुक्त करने के लिए युवाओं से वीरता और बलिदान की मांग करती है। वह अपने अतीत के गौरवमयी इतिहास को दोहराते हुए बलिदान के बिना आजादी संभव नहीं है इसलिए हमें वसंत उत्सव ही मनाना है तो आजादी का मनाना होगा। कवयित्री का कहना है कि, वीरों के जीवन में वसंत तभी आएगा जब देश में शांति और आजादी होगी। अन्यथा उनका वसंत तो युद्ध में ही चला जाएगा। एक वीर योद्धा सारी सुख सुविधाओं को त्याग कर देश की रक्षा के लिए तैयार रहता है। उसके लिए वसंत ऋतु के श्रृंगार और सौंदर्य से ज्यादा वीरता और बलिदान ही सब कुछ है। वसंत ऋतु में कोयल कूकती है तो युद्ध के मैदान में नगाड़े बजते हैं। युद्ध में वीरों के लिए रंग और रण जीवन और मृत्यु के समान है। जीत मिलेगी तो जीवन मिलेगा और पराजय मिली तो मृत्यु। एक बार देश गुलामी से मुक्त होगा तो उसके जीवन में बसंत ही बसंत है स्वतंत्रता ही हमारा सच्चा वसंत और उत्सव है।

इस प्रकार स्वाधीनता आंदोलन में कवि साहित्यकारों ने राष्ट्र जागरण के लिए अपनी कलम ही नहीं चलाई बल्कि जन- मन को मजबूत करते हुए अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया है। यह स्वाधीनता का महायज्ञ किसी एक की जिम्मेदारी नहीं थी। इसीलिए जिन -जिन लोगों ने इस आजादी आंदोलन में अपना योगदान दिया है उन्हें हम भूल नहीं सकते।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) हिंदी साहित्य युग और प्रवृतियाँ-डॉ. शिवकुमार शर्मा, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, पंद्रहवाँ संस्करण- 1996, प्रष्ठ संख्या 432।

2) काव्य तरंग- संपा. डॉ बालाजी भुरे, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण- 2020, पृष्ठ संख्या -85।

3)वही- पृष्ठ संख्या- 88।

4) साहित्य सरिता- संपा. प्रो. जोगेंद्र सिंह बिसेन, ओरियंट लॉंग्मैन प्राइवेट, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण -2008, पृष्ठ संख्या -114।

5) साहित्य सौरभ- संपा. डॉ. सुजितसिंह परिहार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण- 2019, पृष्ठ संख्या- 128।